

फलीपींस को ब्रह्मोस का नरियात

प्रलमिस के लयि:

ब्रह्मोस मसिाइल, दक्षणि चीन सागर ।

मेन्स के लयि:

रक्षा प्रौद्योगिकी, रक्षा नरियात ।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में फलीपींस ने [ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मसिाइल](#) के तट आधारति एंटी-शपि संस्करण की आपूर्ति के लयि [ब्रह्मोस एयरोस्पेस प्राइवेट लिमिटेड](#) के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर कयि हैं । यह इस मसिाइल के लयि पहला नरियात ऑर्डर है, जो भारत और रूस का संयुक्त उत्पाद है ।

- **दक्षणि चीन सागर** में वविादति द्वीपों को लेकर चीन के साथ तनाव के बीच फलीपींस इस मसिाइल को शामिल करना चाहता है ।
- कई देशों ने ब्रह्मोस मसिाइल हासलि करने में दलिचस्पी दिखाई है । उदाहरण के लयि इंडोनेशया और थाईलैंड के साथ चर्चा उन्नत चरणों में है ।

ब्रह्मोस मसिाइल की वशिषताएँ:

- ब्रह्मोस [रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन](#) (The Defence Research and Development Organisation) तथा रूस के NPOM का एक संयुक्त उद्यम है ।
 - इसका नाम भारत की **ब्रह्मपुत्र नदी** और रूस की मोस्कवा नदी के नाम पर रखा गया है ।
- यह दो चरणों वाली (पहले चरण में ठोस प्रणोदक इंजन और दूसरे में तरल रैमजेट) मसिाइल है ।
- यह एक मल्टीप्लेटफॉर्म मसिाइल है यानी इसे ज़मीन, हवा और समुद्र तथा बहु क्षमता वाली मसिाइल से सटीकता के साथ लॉन्च कया जा सकता है, जो कसिी भी मौसम में दनि और रात में काम करती है ।
- यह **‘फायर एंड फॉरगेट्स’** सदिधांत पर कार्य करती है यानी लॉन्च के बाद इसे मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं होती ।
- ब्रह्मोस सबसे तेज़ क्रूज मसिाइलों में से एक है, यह वर्तमान में मैक 2.8 की गतिके साथ कार्य करती है, जो कध्वनिकी गतिसे लगभग 3 गुना अधिक है ।
- हाल ही में [ब्रह्मोस के एक उन्नत संस्करण](#) (वसितारति रेंज सी-टू-सी वेरिएंट) का परीक्षण कया गया था ।
 - भारत द्वारा जून 2016 में [मसिाइल प्रौद्योगिकी नयित्रण व्यवस्था \(Missile Technology Control Regime-MTCR\)](#) में शामिल होने बाद इसकी रेंज को अगले चरण में 450 कमी. तथा 600 कमी. तक वसितारति करने की योजना है ।
 - ब्रह्मोस मसिाइल को शुरुआत में **290 कमी. की रेंज** के साथ वकिसति कया गया था ।

मसिाइल प्रौद्योगिकी नयित्रण व्यवस्था (MTCR) क्या है?

- यह [मसिाइल और मानव रहति हवाई वाहन प्रौद्योगिकी](#) के प्रसार को रोकने हेतु **35 देशों के बीच एक अनौपचारिक एवं स्वैच्छिक साझेदारी** है, जो 500 कलोग्राम से अधिक पेलोड को 300. से अधिक दूरी तक ले जाने में सक्षम है ।
- उन सदस्यों को ऐसी मसिाइलों और यूएवी प्रणालयों की आपूर्ति करने से रोका जाता है जो गैर-सदस्यों की एमटीसीआर द्वारा नयित्तरति होते हैं ।
- ये नरिणय सभी सदस्यों की सहमति से लयि जाते हैं ।
- यह सदस्य देशों का एक गैर-संधिसंघ है, जसिमें मसिाइल प्रणालयों हेतु सूचना साझा करने, राष्ट्रीय नयित्रण कानूनों और नरियात नीतयों तथा इन मसिाइल प्रणालयों की ऐसी महत्त्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों के हस्तांतरण को सीमति करने के लयि एक नयिम-आधारति वनियिमन तंत्र के बारे में कुछ दशा-नरिदेश हैं ।
- इसकी स्थापना अप्रैल **1987 में G-7 देशों- यूएसए, यूके, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा, इटली और जापान** द्वारा की गई थी ।

भारत के रक्षा नरियात की स्थतिक्या है?

- रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिये **रक्षा नरियात सरकार के अभियान का एक स्तंभ** है।
- **30 से अधिक भारतीय रक्षा कंपनियों** ने इटली, मालदीव, श्रीलंका, रूस, **फ्रांस**, नेपाल, मॉरीशस, इजरायल, मसिर, संयुक्त अरब अमीरात, भूटान, इथियोपिया, सऊदी अरब, फिलीपींस, पोलैंड, चिली और स्पेन आदि देशों को हथियारों एवं उपकरणों का नरियात किया है।
- नरियात में व्यक्तगत सुरक्षा उपकरणों, रक्षा इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम, इंजीनियरिंग यांत्रिक उपकरण, अपतटीय गश्ती जहाज़, उन्नत हल्के हेलीकॉप्टर, एवियोनिक्स सूट, रेडियो सिस्टम एवं रडार सिस्टम शामिल हैं।
- हालाँकि भारत का रक्षा नरियात अभी भी अपेक्षित सीमा तक नहीं पहुँचा है।
 - स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) ने वर्ष 2015-2019 के लिये प्रमुख हथियार नरियातकों की सूची में भारत को 23वें स्थान पर रखा है।
 - भारत अभी भी वैश्विक हथियारों का केवल 0.17% हिस्सा नरियात करता है।
- रक्षा नरियात में भारत के निराशाजनक प्रदर्शन का कारण यह है कि भारत के रक्षा मंत्रालय के पास अब तक नरियात हेतु कोई समर्पित एजेंसी नहीं है।
 - नरियात का विषय अलग-अलग नगियों पर छोड़ दिया जाता है, जैसे- 'ब्रह्मोस' या 'रक्षा सार्वजनिक शिपियार्ड' और अन्य उपक्रम।
- इस संदर्भ में KPMG रिपोर्ट 'डिफेंस एक्सपोर्ट्स: अनटैप्ड पोटेंशियल' शीर्षक से एक विशेष "डिफेंस एक्सपोर्ट हेल्प डेस्क" की स्थापना के पहले चरण की सफ़ारिश की गई है।
 - रिपोर्ट में कहा गया है कि हेल्प-डेस्क से मलि इनपुट के आधार पर भारतीय कंपनियों नरियात हेतु सरकारी मशीनरी के साथ काम कर सकती हैं।
- यदि भारत पड़ोस के देशों को बड़ी सैन्य प्रणाली प्रदान करने में सफल होता है, तो यह न केवल रक्षा नरियात को बढ़ावा देगा, बल्कि चीन के प्रभाव का मुकाबला करने के लिये एक रणनीतिक कदम भी होगा, क्योंकि वह पाकिस्तान, बांग्लादेश और म्यांमार सहित एशिया में कई देशों को रक्षा उत्पाद प्रदान करता है।

स्रोत: द हट्टि

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/brahmos-export-to-philippines>

